National Fish Farmers Day–2026

Organized Jointly by
ICAR- Central Institute of Fisheries Education Mumbai and
Department of Fisheries, Government of Maharashtra (Palghar)

The ICAR-Central Institute of Fisheries Education (ICAR-CIFE), Mumbai, in collaboration with the Department of Fisheries, Government of Maharashtra (Palghar), celebrated National Fish Farmers Day 2026 on 10 July 2026 under the guidance of Dr. N. P. Sahu, Director, ICAR-CIFE. Held in conjunction with the International Year of the Woman Farmer (IYWF)-2026, the programme brought together 116 participants, including fish farmers, fisherwomen, fisheries cooperatives, scientists, extension professionals, and Department of Fisheries officials, and commemorated the pioneering contributions of Dr. Hiralal Chaudhuri and Dr. A. H. Alikunhi to induced breeding in Indian aquaculture.

In his inaugural address, Dr. K. N. Mohanta, Joint Director (Acting), ICAR-CIFE, stressed scientific aquaculture, value chain development, and capacity building toward India's target of 40 million metric tonnes of fish production by 2047, while highlighting Maharashtra's fisheries potential, the need to boost domestic fish consumption and deep-sea fishing, and the importance of formal fisheries education for youth.

On behalf of the Department of Fisheries, Palghar, Mrs. Deepali Bandhakar, Assistant Fisheries Commissioner, and Mr. Vinod Lahare, AFDO, welcomed the participants. Dr. Arpita Sharma, Head, FEES Division, ICAR-CIFE, outlined the programme's objectives, underscoring science-led extension in strengthening fish farming livelihoods.

The technical session, "Man Ki Baat – Matsya Kisan Ke Sath", moderated by Dr. Shivaji D. Argade and Dr. Neha Qureshi, featured expert sessions by ICAR-CIFE scientists and Department officials on scientific stocking and cage culture (Dr. Kapil Sukhdhane), responsible minimum-harvest-size practices (Dr. Karan Kumar Ramteke), integrated shrimp-seaweed farming (Dr. Madhuri Pathak), low-cost feed from fish-waste hydrolysis (Dr. Sikendra Kumar), pond/soil health and fertilizer management (Dr. Ankush Kamble), and drone/ICT applications and jellyfish utilization (Dr. Ananthan P. S. and Mr. Abuthagir I. S.). Officials also briefed farmers on beneficiary-oriented government schemes, including the Mukhyamantri Matsya Sampada Yojana.

A major highlight was the felicitation of ten progressive fish farmers, fisherwomen, and fisheries cooperatives from Palghar and Thane districts for contributions in shrimp farming, RAS, hatchery development, carp culture, mud crab farming, cage culture, and fish processing. A farmer from the Sahyadri Group, Padoshi, thanked ICAR-CIFE and the Department of Fisheries on behalf of the fisher and fish farmers.

The programme concluded with a vote of thanks by Dr. Arpita Sharma. Carry baskets were distributed to women fish vendors under the ICAR-funded project "Swachhta Action Plan and the Commercial Utilization of Fish Waste From Urban Fish Markets."

The event was organized by the FEES Division, ICAR-CIFE, coordinated by Dr. Arpita Sharma, Dr. Neha Qureshi, and Dr. Shivaji D. Argade, and closed with a video developed by research scholars Vadra, Akshata, Nishant, Kaushal, and Akhilesh.

भा. कृ. अनु. प. – के. मा. शि. सं., मुंबई एवं मत्स्य विभाग, महाराष्ट्र शासन, पालघर के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस–2026 का आयोजन

भा. कृ. अनु. प. – के. मा. शि. सं., मुंबई ने मत्स्य विभाग, महाराष्ट्र शासन (पालघर) के साथ संयुक्त रूप से 10 जुलाई 2026 को राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस 2026 का आयोजन किया। यह कार्यक्रम भा. कृ. अनु. प. – के. मा. शि. सं., मुंबई के निदेशक डॉ. एन. पी. साहू के मार्गदर्शन में तथा अंतरराष्ट्रीय महिला किसान वर्ष (IYWF)-2026 के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में 116 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें मत्स्य किसान, मत्स्य महिला किसान, मत्स्य सहकारी समितियों के सदस्य, वैज्ञानिक, प्रसार विशेषज्ञ तथा मत्स्य विभाग के अधिकारी शामिल थे। इस अवसर पर प्रेरित प्रजनन (Induced Breeding) तकनीक के माध्यम से भारत में मत्स्य पालन क्षेत्र में क्रांतिकारी योगदान देने वाले डॉ. हीरालाल चौधरी एवं डॉ. ए. एच. अलीकुन्ही को भी श्रद्धापूर्वक स्मरण किया गया। अपने उद्घाटन संबोधन में भा. कृ. अनु. प. – के. मा. शि. सं., मुंबई के कार्यवाहक संयुक्त निदेशक डॉ. के. एन. मोहंता ने वैज्ञानिक मत्स्य पालन, मिश्रित मत्स्य पालन (कॉम्पोजिट फिश कल्चर), मूल्य श्रृंखला विकास तथा क्षमता निर्माण के महत्व पर प्रकाश डाला। सहायक मत्स्य आयुक्त श्रीमती दीपाली बांधकर की ओर से श्री विनोद लाहरे, सहायक मत्स्य विकास अधिकारी (AFDO), पालघर ने सभी अतिथियों, मत्स्य किसानों एवं महिला किसानों का स्वागत किया। इसके बाद आयोजन सचिव एवं विभागाध्यक्ष डॉ. अर्पिता शर्मा ने कार्यक्रम के उद्देश्यों की जानकारी देते हुए वैज्ञानिक प्रसार एवं क्षमता निर्माण की भूमिका पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के अंतर्गत "मन की बात – मत्स्य किसान के साथ" विषय पर एक संवादात्मक तकनीकी सत्र आयोजित किया गया, जिसका संचालन डॉ. शिवाजी डी. अर्गड़े एवं डॉ. नेहा कुरैशी ने किया। डॉ. कपिल सुखधाने, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा. कृ. अनु. प. – के. मा. शि. सं., मुंबई ने अपने व्याख्यान में जलीय कृषि का विस्तृत परिचय दिया। डॉ. करण कुमार रामटेके, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा. कृ. अनु. प. – के. मा. शि. सं., मुंबई ने जिम्मेदार मत्स्य प्रबंधन विषय पर किसानों को मछलियों की अनुशंसित न्यूनतम लंबाई प्राप्त होने के बाद ही उनका दोहन करने की सलाह दी। डॉ. माधुरी पाठक, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा. कृ. अनु. प. – के. मा. शि. सं., मुंबई ने झींगा पालन की नवीन तकनीकों पर व्याख्यान दिया। उन्होंने विशेष रूप से झींगा-समुद्री शैवाल (Seaweed) एकीकृत पालन के लाभों की जानकारी दी तथा बताया कि कटाई के बाद समुद्री शैवाल का उपयोग पूरक आहार के रूप में भी किया जा सकता है। डॉ. सिकेंद्र कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा. कृ. अनु. प. – के. मा. शि. सं., मुंबई ने कम लागत वाले फार्म-निर्मित मछली आहार पर जानकारी दी। डॉ. अंकुश कांबले, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा. कृ. अनु. प. – के. मा. शि. सं., मुंबई ने तालाब एवं मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन पर व्याख्यान देते हुए मृदा गुणवत्ता परीक्षण एवं लवणता जांच की विधियों की जानकारी दी। ड्रोन एवं सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के उपयोग पर डॉ. अनन्थन पी. एस., प्रधान वैज्ञानिक एवं श्री अबुथागिर आई. एस., वैज्ञानिक, भा. कृ. अनु. प. – के. मा. शि. सं., मुंबई ने ड्रोन दीदी पहल की जानकारी दी। डॉ. विलास जाधव, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, कोसबाड हिल ने वैज्ञानिक मत्स्य पालन की संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए किसानों को केवीके एवं आईसीएआर-सीआईएफई द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे तकनीकी सहयोग एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। श्रीमती संजना सारंग, मत्स्य विकास अधिकारी, पालघर ने मत्स्य विभाग द्वारा संचालित विभिन्न विकासात्मक एवं लाभार्थी आधारित योजनाओं की जानकारी दी। मत्स्य विभाग, पालघर के श्री सचिन कुरकुटे एवं श्री विनोद लाहरे, सहायक मत्स्य विकास अधिकारियों ने विभिन्न सरकारी योजनाओं, उनके अंतर्गत उपलब्ध अनुदान, पात्रता मानदंड एवं आवेदन प्रक्रिया की विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण पालघर एवं ठाणे जिले के दस प्रगतिशील मत्स्य किसानों, महिला मत्स्य किसानों, मत्स्य सहकारी समितियों एवं किसान संगठनों का सम्मान था। इन्हें झींगा पालन, आरएएस आधारित मत्स्य पालन, फिनफिश हैचरी विकास, कार्प पालन, वर्टिकल मड क्रैब पालन, केज कल्चर तथा मत्स्य प्रसंस्करण एवं विपणन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अंत में सह्याद्री समूह, पडोशी के एक प्रगतिशील मत्स्य किसान ने किसानों की ओर से आईसीएआर-सीआईएफई के वैज्ञानिकों एवं मत्स्य विभाग, पालघर के अधिकारियों का आभार व्यक्त किया। अंत में डॉ. अर्पिता शर्मा ने मत्स्य विभाग, सभी वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों, मत्स्य किसानों तथा आयोजन समिति का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के अंत में, भा. कृ. अनु. प., नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित अनुसंधान परियोजना "स्वच्छता कार्य योजना एवं शहरी मत्स्य बाजारों से प्राप्त मत्स्य अपशिष्ट का वाणिज्यिक उपयोग" के अंतर्गत महिला मत्स्य विक्रेताओं को प्लास्टिक बास्केट का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन भा. कृ. अनु. प. – के. मा. शि. सं., मुंबई के मत्स्य अर्थशास्त्र, प्रसार एवं सांख्यिकी प्रभाग द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. अर्पिता शर्मा, विभागाध्यक्ष, डॉ. नेहा कुरैशी तथा डॉ. शिवाजी अर्गड़े, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के अंत में युवा शोधार्थियों वद्रा, अक्षता, निशांत, कौशल एवं अखिलेश द्वारा तैयार की गई एक लघु वीडियो प्रदर्शित की गई, जिसकी सभी उपस्थितजनों ने सराहना की।

CIFE-GlowX